

## मसूतषिक ज़वर के पीछे का वजिज्ञान

### चरचा में क्यों ?

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज अस्पताल में गंभीर रूप से बीमार एक के बाद एक 60 से अधिक बच्चों की मौत ने पूरे देश को हला दयिा है। उत्तर प्रदेश समेत देश के 14 राज्यों में इस बीमारी का असर है और रोकथाम के बजाय इलाज पर ध्यान देने की कारण यह बीमारी अभी भी बरकरार है।

आज भी योगी आदतियनाथ सरकार इस बीमारी का कारण खराब स्वच्छता को बता रही है। हालाँकि स्थानिक स्क्रब टाइफस और मसूतषिक ज़वर के बीच संबंध को स्वीकार कयि बना सरकार के लयि इस चकितिसकीय आपात से नपिटना कठनि है।

### मसूतषिक ज़वर का मूल कारण

- मणपिल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरस रसिर्च के गोवदिकरनार अरुणकुमार जैसे शोधकर्त्ताओं के आधुनिक शोध के अनुसार इस बीमारी का मूल कारण स्क्रब टाइफस (scrub typhus) है।
- स्क्रब टाइफस एक घुनजन्य रोग है, जो उत्तर प्रदेश में स्थानिक है।
- 1978 में गोरखपुर में इस बीमारी का जब पहली बार पता लगाया गया था, तब अस्पताल के डॉक्टरों ने पुष्टि की थी कि इस बीमारी के फैलने का मुख्य कारण जापानी एन्सेफलाइटिस (जे.ई.) वायरस है।

### गलत दृष्टिकोण

- स्क्रब टाइफस को समझने में इतनी देर इसलिये हुई क्योंकि वैज्ञानिकों को प्रत्येक रोगी के लक्षणों जैसे एन्सेफलाइटिस से पहले बुखार की अवधि और मसूतषिक के अलावा अन्य अंगों, जैसे यकृत और प्लीहा की भागीदारी को वसितार से पढ़ना चाहयि था।
- यदयि लक्षणों पर शोध कयिा गया होता तो यह स्पष्ट हो गया होता कयिह महामारी केवल सामान्य वायरस के वजह से नहीं है।

### आँकड़ों की अनसुनी

- दूसरी चूक यह थी कि उत्तर प्रदेश प्रशासन वैज्ञानिकों की राय नहीं सुन रहा था, जनिका कहना था कि गोरखपुर की यह बीमारी पछिले कुछ वर्षों में बदल चुकी है।
- जब 2007 में जापानी एन्सेफलाइटिस टीकाकरण शुरू हुआ, तब इस बीमारी की घटनाएँ 20% से भी कम हो गईं, लेकिन एन्सेफलाइटिस के मामलों का आना जारी रहा। तब शोधकर्त्ताओं को यकीन हो गया कि इसके पीछे जापानी एन्सेफलाइटिस के अलावा कुछ अन्य कारण भी हैं।

### मसूतषिक ज़वर : एक नज़र

- मसूतषिक ज़वर न सरिफ गोरखपुर, बल्कि पूरवी उत्तर प्रदेश के सोलह ज़िलों की समस्या है। इन ज़िलों में हर साल जून से नवंबर के बीच यह ज़वर कहर बरपाता और बड़ों से अधिक बच्चों को शकित बनाता है।
- अपने नन्हे मासूमों को खो देने वाले माताओं-पतिाओं की मानें तो इससे त्रस्त इस अंचल के लोगों ने अब इसको अपनी नयित-सी मान ली है। आँकड़े गवाह हैं कि मसूतषिक ज़वर से सत्तर के दशक से अब तक इस अंचल में एक लाख से ज्यादा मौतें हो चुकी हैं।
- केंद्रीय संचारी रोग नयितरण कार्यक्रम (एनवीबीडीसीपी) नदिशालय के आँकड़ों के अनुसार उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम और बहिर समेत 14 राज्यों में एन्सेफलाइटिस का प्रभाव है, लेकिन पश्चिम बंगाल, असम, बहिर तथा उत्तर प्रदेश के पूरवांचल में इस बीमारी का प्रकोप काफी अधिक है।
- उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, महाराजगंज, कुशीनगर, बस्ती, सदिधार्थनगर, संत कबीरनगर, देवरयिा और मऊ समेत 12 ज़िले इससे प्रभावति हैं।
- इस साल गोरखपुर मेडिकल कॉलेज में अब तक इस बीमारी से कुल 139 बच्चों की मृतयु हुई है। पूरे राज्य में यह आँकड़ा 155 तक पहुँच चुका है। पछिले साल 641 तथा वर्ष 2015 में 491 बच्चों की मौत हुई थी।
- गोरखपुर मेडिकल कालेज अस्पताल में पूरवांचल के अलावा बहिर और नेपाल से भी मरीज इलाज कराने आते हैं। पूरवांचल में दमिगी बुखार का प्रकोप फैलने के कारण इस इलाके में सबसे अधिक अशकित और पछिड़ापन है। लोगों में साफ-सफाई के प्रती जागरूकता की कमी है।

